Lecture Series No - 39

11.5.2020

for

BA(H) Part-1, Paper-1

Dr. Suman Kumar Poddar

(Lecture Series No - 39)

Topic :- Price Determination in Monopoly - 2
(एकाधिकार में कीमत निर्धारण) - 2

व्याख्यान संख्या - 38 के माध्यम से हम एकाधिकार में कीमत निर्धारण की शुरुआत किए व्याख्यान संख्या 37 में हम (i) अल्पकाल में एकाधिकारी कीमत या साम्य, का पूर्णतः व्याख्या किए अब हम व्याख्यान के माध्यम से दीर्घकाल में एकाधिकारी साम्य का व्याख्या करना चाहते हैं जो निम्नलिखित है :—

(ii) दीर्घकाल में एकाधिकारी साम्य (Long-run Equilibrium under Monopoly) :— दीर्घकाल में एकाधिकारी फर्म आवश्यकतानुसार उत्पादन के सब साधनों की मात्रा में परिवर्तन कर सकती है। फर्म अपने संयन्त्र के आकार को भी छोटा-बड़ा कर सकती है। इसलिए दीर्घकाल में एकाधिकारी हानि की अवस्था में उत्पादन जारी नहीं रखेगा, वह उत्पादन बन्द कर देगा। एकाधिकारी होने के कारण वह दीर्घकाल में इस प्रकार से व्यवस्था करेगा कि उसे असामान्य लाभ प्राप्त होने के निम्न दो कारण हैं :— प्रथम, नई फर्मों का बाजार में प्रवेश प्रतिबंधित होता है द्वितीय, एकाधिकारी को दीर्घकाल में अतिरिक्त लाभ प्राप्त नहीं होगा तो वह उत्पादन बन्द कर देगा।

चूँकि दीर्घकाल में एकाधिकार फर्म या उद्योग के विस्तार या संकुचन की पूर्ण सम्भावना होती है। दीर्घकाल में अतिरिक्त लाभ प्राप्त नहीं होगा तो वह उत्पादन बन्द कर देगा लेकिन दीर्घकाल में एकाधिकारी फर्म बड़े पैमाने पर उत्पादन कर सकती है और उसे आरम्भ में आन्तरिक एवं बाहरी बचतें (Internal & External Economies) प्राप्त होती हैं जो कुछ समय बाद आन्तरिक एवं बाहरी हानियों (Internal & External Diseconomies) में बदल जाती हैं। दूसरे शब्दों में, दीर्घकाल में एकाधिकारी फर्म के साम्य पर (लागतों) अर्थात उत्पादन के नियमों

Scanned with CamScanner

का प्रभाव पड़ा करता है। अन्य शब्दों में, वर्धमान लागत नियम' (Law of Increasing Cost), "घटती हुई लागत नियम' (Law of Decreasing Cost) तथा लागत स्थिरता नियम (Law of Constant Cost) का प्रभाव पड़ता है। दीर्घकाल में एकाधिकार को Normal Profit होता है। तीनों दशाओं में लाभ की स्थितियाँ निम्नवत हैं।

(1) घटती लागत (Diminishing Cost) → यदि उत्पादन घटती लागत के अन्तर्गत हो रहा है तो इसका अभिप्राय यह होगा कि जैसे-जैसे उत्पादन बढ़ रहा है, वैसे-वैसे लागत घट रही है। इस अवस्था में एकाधिकारी को कीमत कम रखनी चाहिए तथा अधिक उत्पादन करना चाहिए। इस चित्र 6 द्वारा इसे अधिक स्पष्ट किया जा सकता है:—

चित्र 6 में लागत रेखाएँ AC तथा MC नीचे को गिरी हुई हैं। एकाधिकारी P बिन्दु पर संतुलन में होगा क्योंकि बिन्दु P पर MC = MR है, संतुलन उत्पादन OM मात्रा का किया जायेगा। उत्पादन की इस मात्रा पर कीमत (OC = DM) औसत लागत (OC = BM) से अधिक है। इसलिए एकाधिकारी को कुल लाभ ABCD मिल रहे हैं।

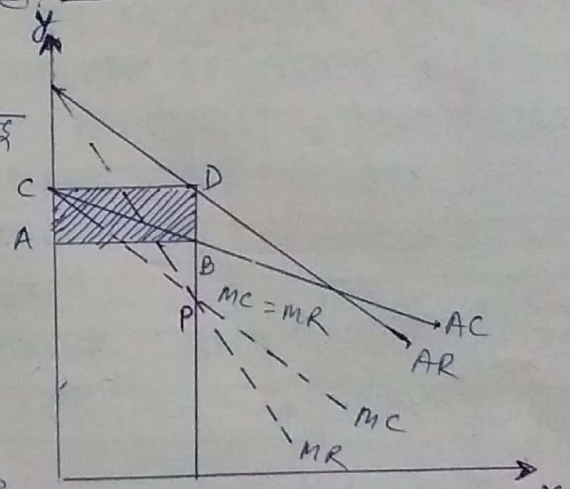

चित्र संख्या- 6

(2) स्थिर लागत (Constant Cost):— इस अवस्था में चाहे उत्पादन अधिक किया जाय या कम, उत्पादन लागत समान रहेगी। जिसको आगे पृष्ठ पर चित्र 7 के द्वारा अधिक स्पष्ट किया जा सकता है।

चित्र 7 में AC = MC समान लागत वक्र हैं। यह OX रेखा के समानान्तर है। फर्म का संतुलन बिन्दु B होगा। इस बिन्दु पर (MC = MR) है। इस अवस्था में OM उत्पादन होगा। कीमत (OC = DM) तथा औसत लागत (OA = BM) निर्धारित होगी। कीमत (DM) के औसत लागत BM से अधिक होने के कारण एकाधिकारी को DM प्रति इकाई तथा ABCD कुल लाभ प्राप्त होगें।

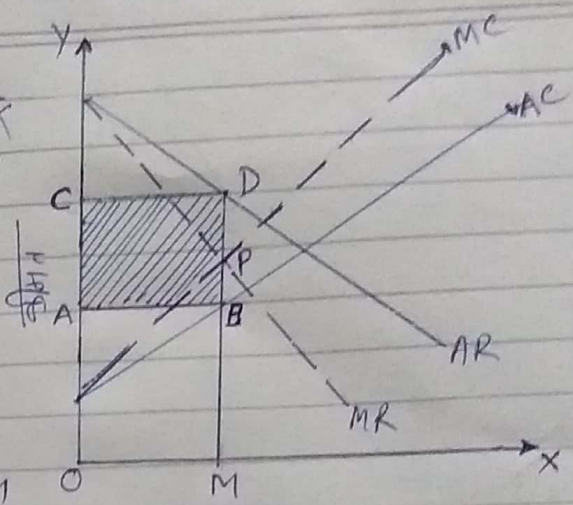

चित्र 7

(3) बढ़ती लागत (Increasing Cost) - यदि उत्पादन बढ़ती लागतों के अधीन हो रहा है अर्थात् जैसे-जैसे उत्पादन बढ़ता है, उत्पादन लागत भी बढ़ जाती है तो इस अवस्था में एकाधिकारी के लिए यह उचित होगा कि वह उत्पादन कम मात्रा में करे तथा वस्तु की कीमत ऊँची निश्चित करे। चित्र 8 में लागत रेखाएँ AC और MC ऊपर की ओर बढ़ रही है। एकाधिकारी P बिन्दु पर संतुलन की स्थिति में होगा क्योंकि बिन्दु P पर MR = MC के है। अतएव उत्पादन OM मात्रा का किया जायेगा। इस मात्रा की कीमत OC (DM) तथा औसत लागत OA (BM) होगी इस स्थिति में कीमत DM के औसत लागत BM से अधिक होने के कारण एकाधिकारी को DM प्रति इकाई लाभ प्राप्त होगा तथा एकाधिकारी को कुल लाभ DBAC प्राप्त होगा।

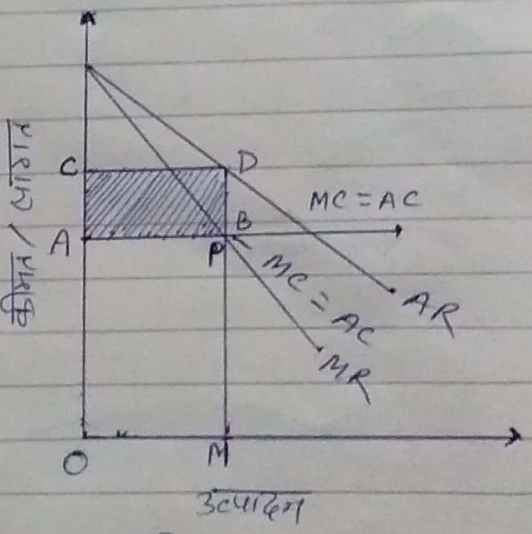

चित्र 8

Scanned with CamScanner